1.1 समाज [Society]

समाज की अवधारणा
(Concept of Society)

प्रायः हम दो या दो से अधिक व्यक्तियों के समूह को समाज कहते हैं। बिना समाज के अकेले मनुष्य का कोई अस्तित्व नहीं है। आदिकाल में मनुष्य जीव-जन्तुओं के समान ही जीवन व्यतीत करता था। पेट की भूख शान्त करना ही उसका एकमात्र उद्देश्य था। परन्तु उसे प्रकृति से विशिष्ट वाणी और विलक्षण बुद्धि उपहारस्वरूप मिली हुई है, वह उसे जानवरों से भिन्न बनाती है। इसी के बल पर उसने जानवरों के समान जीवन का त्याग करके एक अनोखी सामूहिक जीवन पद्धति का आविष्कार किया। यहीं से मानवीय सभ्यता का शुभारम्भ हुआ। उसने भोजन पकाना, वस्त्र, कृषि आदि के माध्यम से पारिवारिक जीवन की शुरुआत की। यह कार्य किसी अकेले व्यक्ति के दम पर सम्भव नहीं था। अतः उसने समाज का निर्माण किया।

उन्होंने पारस्परिक सहयोग व अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु समाज का निर्माण कर लिया। धीरे-धीरे मनुष्यों में लैंगिक साहचर्य, रिश्ते तथा सुख-दुःख की सहभागिता आदि पनपने लगी। इससे इन्हें एक-दूसरे के अस्तित्व का आभास होने लगा। प्रसिद्ध समाजशास्त्री **मैकाइवर** ने अपनी पुस्तक *'समाज'* में लिखा— *"समाज सामाजिक सम्बन्धों का एक बारीक जाल है।"*

"Society is the cobweb of social relationship." —**MacIver**

अरस्तू के अनुसार— *"मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है।"*

समाज का सबसे आधारभूत लक्षण वैयक्तिक विभिन्नता है, क्योंकि कोई दो व्यक्ति पूर्ण रूप से समान नहीं होते हैं। प्रत्येक व्यक्ति का शारीरिक, मानसिक और बौद्धिक विकास अपने ढंग से ही होता है। प्रत्येक व्यक्ति की रुचियों एवं क्षमताओं में विभिन्नता होती है। यही समाज की मूल अवधारणा है और यही उसका मूल आधार है। मिल-जुलकर प्रेम-सहयोगपूर्वक रहने की यही भावना समाज को एक सूत्र में बाँधती है क्योंकि एक व्यक्ति अपने गुणों के माध्यम से कई लोगों के काम आता है। प्रत्येक व्यक्ति अपने इस सामाजिक उत्तरदायित्व को निभाते हुए सभी के लिए विकास के मार्ग को प्रशस्त करता है और वे आपसी सहयोग से ही समाज का निर्माण करते हैं। इसी के परिणामस्वरूप समाज व्यक्तियों को सुरक्षा, सुविधाएँ और आश्रय प्रदान करता है। यहीं पर मनुष्यों में पारस्परिक प्रेम, भाईचारा, सहयोग, सहिष्णुता, सम्मान और परोपकार आदि गुणों का उदय होता है। समाज में सहकारिता, उत्तरदायित्व, कर्त्तव्यनिष्ठा, मानवीय संवेदनाओं, आध्यात्मिक एवं भौतिक प्रगति, रोजगार, आर्थिक सहयोग, नियोजन व शिक्षा आदि जैसे जीवन के महत्त्वपूर्ण मूल्यों का निर्माण किया जाता है।

आर०जी० कॉलिंगवुड ने समाज के विषय में लिखा है— *"समाज एक प्रकार का समुदाय है (अथवा समुदाय का भाग है), जिसके सदस्य अपने जीवन के तौर-तरीकों के प्रति सामाजिक रूप से चैतन्य होते हैं तथा वे समान उद्देश्यों व मूल्यों के आधार पर एक-दूसरे से बँधे होते हैं।"*

Scanned with CamScanner

समाज का अर्थ एवं परिभाषा
(Meaning and Definition of Society)

एक संगठित विज्ञान के रूप में समाजशास्त्र 'सामाजिक जीवन' का ही अध्ययन करता है और सामाजिक जीवन समाज की परिधि में ही फलीभूत होता है अर्थात् समाजशास्त्र समाज एवं समाज के विविध आयामों का ही वैज्ञानिक विश्लेषण है, इस दृष्टिकोण से समाजशास्त्र की विभिन्न बुनियादी अवधारणाओं में 'समाज' की अवधारणा का केन्द्रीय स्थान होना स्वाभाविक है।

समाज का अस्तित्व तो काफी प्राचीन समय से है, लेकिन समाज की अवधारणात्मक विश्लेषण की शुरुआत आधुनिक काल में हुई। 16वीं से 18वीं सदी के कुछ समझौतावादी विचारकों ने मत प्रकट किया कि समाज मनुष्यों के आपसी समझौते का प्रतिफल है, जिसकी रचना मनुष्य ने या तो अव्यवस्था की समाप्ति अथवा प्रकृति के नियमों से मुक्ति पाने के लिए की, समाज की यह व्याख्या समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से महत्त्वपूर्ण नहीं है, समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से समाज की अवधारणात्मक व्याख्या में यह जानने का प्रयास किया जाता है कि समाज क्यों और कैसे बनते हैं तथा अस्तित्व में रहते हैं, इस दृष्टिकोण से विभिन्न समाजशास्त्रियों ने समाज की जो परिभाषाएँ दी हैं, वे इस प्रकार हैं—

आर०एम० मैकाइवर एवं **सी०एच० पेज** (R.M. MacIver and C.H. Page) ने कहा है—*"समाज अधिकार एवं पारस्परिक सहायता, अनेक समूहों तथा अनेक विभाजनों, मानव व्यवहार के नियन्त्रणों और स्वतन्त्रताओं से प्रथाओं तथा कार्य-विधियों की प्रणाली है, यह सामाजिक सम्बन्धों का जाल है, जो सतत् परिवर्तनशील और जटिल है।"*

मोरिस गिन्सबर्ग (Morris Ginsberg) का कहना है कि *"समाज ऐसे व्यक्तियों का संग्रह है जो कुछ सम्बन्धों अथवा व्यवहार की विधियों द्वारा संगठित हैं तथा उन व्यक्तियों से भिन्न हैं जो इस प्रकार के सम्बन्धों द्वारा बँधे हुए नहीं हैं अथवा जिनके व्यवहार उनसे भिन्न हैं।"*

गिडिंग्स (Giddings) के शब्दों में—*"समाज स्वयं संगठन है, औपचारिक सम्बन्धों का भाग है, जिसमें सहयोग देने वाले व्यक्ति एक-दूसरे के साथ जुड़े हुए या सम्बद्ध हैं।"*

ई०बी० रयूटर (E.B. Reuter) का कथन है—*"समाज एक अवधारणा है जो एक समूह के सदस्यों के बीच पाए जाने वाले पारस्परिक सम्बन्धों की सम्पूर्णता का बोध कराती है।"*

जॉर्ज सिमेल (George Simmel) ने माना है—*"समाज उन व्यक्तियों का समूह है जो अन्तःक्रिया द्वारा सम्बन्धित हैं।"*

के० डेविस (K.Davis) ने समाज की परिभाषा में कुछ नवीनता लाते हुए कहा है—*"यह ध्यान रखने योग्य है कि केवल सामाजिक सम्बन्ध का ढेर ही समाज नहीं होता जब सामाजिक सम्बन्धों की एक*

Scanned with CamScanner

व्यवस्था बनती है, तभी हमें इस शब्द का उचित प्रयोग करना चाहिए।" अर्थात् जब कुछ व्यक्ति व्यवस्थित रूप से सम्बन्धों की स्थापना करते हैं, तो वे समाज का निर्माण करते हैं, डेविस ने समाज के निर्माण हेतु चार आवश्यक तत्त्वों का उल्लेख किया है—

(1) जनसंख्या की निरन्तरता
(2) जनसंख्या में श्रम-विभाजन
(3) सामूहिक एकता
(4) सामाजिक व्यवस्था में स्थायित्व

उपर्युक्त परिभाषाओं से स्पष्ट है कि सभी समाजशास्त्रियों का मत लगभग एक-जैसा ही है, सभी मानवीय सम्बन्धों के आधार पर ही समाज के निर्माण की बात स्वीकार करते हैं। वास्तव में, जब दो व्यक्ति आपस में मिलते हैं तो उनके मध्य अन्तःक्रियाओं का एक सिलसिला प्रारम्भ होता है, अन्तःक्रिया का तात्पर्य एक व्यक्ति का दूसरे व्यक्ति के सापेक्ष सम्बन्धित व्यवहार से है, जब इन अन्तःक्रियाओं का एक निश्चित उद्देश्य होता है, तो ये सामाजिक क्रिया (Social Action) कहलाती हैं। इन अन्तःक्रियाओं के आधार पर ही दो व्यक्तियों के बीच मानवीय सम्बन्ध स्थापित होते हैं, इन्हीं मानवीय सम्बन्धों का समुच्चय 'समाज' कहलाता है, जब लोग आपस में सुसंगठित एवं सुपरिचित ढंग से सम्बन्धित हो जाते हैं तो ये मानवीय सम्बन्ध सामाजिक सम्बन्ध के रूप में संस्थागत बन जाते हैं और समाज की निरन्तरता बनी रहती है, समाज के निर्माण में सामाजिक सम्बन्धों की केन्द्रीय भूमिका होने के कारण ही समाज को 'सम्बन्धमूलक अवधारणा' भी कहा जाता है।

Scanned with CamScanner